हरभजन सिंह खेमकरणी

ई—मेल-hskhemkerni@gmail.com

मकरी गंध

नशा मुक्ति केन्द्र में दाखिल हवलदार दर्शन सिंह बिना किसी को यह बताए कि वह पुलिस में है, नशा छोड़ने का इलाज करवा रहा था। बड़े बुजुर्ग कहते हैं कि आदमी के व्यवहार का प्रभाव उसके जीवन पर भी पड़ता है और कुछ बातें बोलचाल में अपने आप ही उसके स्वभाव में शामिल हो जाती हैं जिनका कभी उसे अहसास भी नहीं होता। हवलदार दर्शन सिंह भी अपनी पुलिसिया बोली व चाल ढाल के होते हुए अपनी पहचान छुपाने में असफल रहा था। इसीलिए केन्द्र में इलाज करवा रहे नशेड़ी उसे संदेह की नज़र से देखते और अक्सर उसके साथ बातचीत करने में हिचकते। वह सोचते कि पुलिस विभाग ने जान-बूझ कर हवलदार दर्शन सिंह को यहाँ भर्ती किया है ताकि जो नशेड़ी यहाँ पर नशा कर रहे हैं उनसे यह बात पता कर सके कि नशा आता कहाँ से है। इस केन्द्र के बारे में यह आम चर्चा थी कि यहां पर हर प्रकार का नशा इनके कर्मचारियों के जरिए आसानी से मिल जाता है। परन्तु जब डॉक्टर ने हवलदार दर्शन सिंह का भी इलाज शुरू कर दिया तो सभी निश्चित हो गए थे।

बराबर आयु का होने के कारण साथ के बैड वाले हरदीप सिंह से जब हवलदार ने दोस्ती कर ली तो एक दिन वह बोला, "हरदीप सिंह क्या इलाज कराने से कोई फर्क पड़ा?"

"क्या बताऊँ यार, एक तो यह डॉक्टर पैसों के लालच में मरीज को जल्दी ठीक नहीं होने देता। दूसरा यहाँ के कर्मचारी नशा बेचने वालों के साथ मिले हुए हैं। उनके जरिए यहाँ पर हर तरह का नशा मिल जाता है। जब वह नशे के दर्शन करवाते हैं तो मन डोल जाता है, फर्क तो क्या पड़ना था, उल्टा नशा पहले से ज़्यादा हो गया है।"

"मैं भी सोचता था कि यह जवान लड़के सुबह-सुबह डॉक्टर के आने से कुछ समय पहले ही आ जाते हैं और फिर सारा दिन बाहर रहते हैं। यह तो फिर नशा करने के लिए ही आते होंगे।" हवलदार दर्शन सिंह ने मन की शंका जाहिर की।

"तू तो सुना है कि नशेड़ियों पर बड़ा शिकंजा कसता है, फिर यह लानत कहाँ से पाल ली?" हरदीप सिंह ने बात पलटते हुए कहा।

हवलदार दर्शन सिंह ने एक गहरी सांस ली और बोला "भाई हमारा थाना सरहद पे है। बार्डर के जरिए होती स्मगलिंग को रोकने के लिए रोज नाका लगता और दूसरे चौथे दिन हीरोइन किलो के हिसाब से पकड़ी जाती। कभी स्मैक, फक्की, अफीम भी पकड़ी जाती। मुंशी लगा होने की वजह से पकड़े माल का हिसाब-किताब मुझे ही संभालना पड़ता। मेरे कमरे में ही पलाई की पार्टिशन डालकर माल-खाना बनाया हुआ है। सरकारी करवाई डालने के पश्चात् वह माल माल-खाने में जमा होता रहता। कसम गुरु की मैंने कभी नशे को हाथ नहीं लगाया, बस उस कमरे में उठती मिली-जुली गंध ने ही मुझे नशेड़ी बना डाला।"

हिन्दी अनुवाद : जगदीश राय कुलरियाँ

हरभजन सिंह खेमरकणी : पंजाबी साहित्य जगत की मशहूर शख्सियत हैं। कहानी, लघुकथा और कविता के क्षेत्र में अच्छा नाम। इनके तीन लघुकथा संग्रह के अलावा कहानियों, कविताओं और ग़ज़लों की किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका एक लघुकथा संग्रह पंजाबी से हिंदी भाषा में अनूदित हो चुका है। इनकी लघुकथाओं का उर्दू, मराठी, शाहमुखी, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया है।